दीपावली की अपनी कविता को साझा कीजिए

७ नवम्बर, २०२३

प्रिय पाठक,

शुभ दीपावली!

मुझे लगता है कि शायद मेरी तरह आप भी गुरुमाई जी की दीपावली-कविता में निहित प्रकाश, प्रेम और प्रज्ञान की अपरिमितता में आह्लादित हो रहे हैं। मैं इस कविता को बार-बार पढ़ रही हूँ—कभी रोशनी से जगमगाते इस वाक्य को फिर से पढ़ती हूँ तो कभी उस वाक्य को, अप्रत्याशित-सी चित्रावलि में आनन्दित होती हूँ, हर पद्य में छिपे अनेक अर्थों पर चिन्तन करती हूँ। मुझे यूँ लगता है मानो गुरुमाई जी की यह कविता हमें जीवन जीने के ढंग से परिचित करा रही है, मानो यह अत्यन्त उत्कृष्ट तरीक़े से लिखी गई एक पुस्तिका है जो यह बताती है कि इस संसार में कैसे रहा जाए।

इस समय लाखों लोग, भारतवासी भी और जहाँ-जहाँ भारतीय मूल के लोग रहते हैं वे भी, दीपावली और नववर्ष का उत्सव मना रहे हैं। दीपक प्रज्वलित हो गए हैं। लोग थालियों में चाँदी के महीन वर्क से सजी, केसर व पिस्ते से बनी मिठाइयाँ एक-दूसरे को बाँट रहे हैं। यह ख़्वाहिश सभी की है कि कुछ नवीन हो, कुछ नया हो, कि वे एक अधिक उज्ज्वल और आशापूर्ण भविष्य का स्वागत करें।

मुझे लगता है कि गुरुमाई जी की यह कविता नवीनता की इस ख़्वाहिश को मान्यता भी देती है और साथ ही इसे पूर्ण भी करती है। मैंने ऐसी कविता पहले कभी नहीं पढ़ी, जो असाधारण है, न केवल ज्ञान प्रदान करने के लिए, बल्कि अपनी संरचना, अपनी रूपरेखा, अपनी प्रस्तुति के डिज़ाइन के कारण भी—ऐसी कला जो कविता में प्रयुक्त भाषा और उसके आशय से जुदा नहीं है। आपमें से जो हिन्दी पढ़ते हैं, उन्होंने देखा होगा कि कविता के सबसे ऊपर, पत्तियों से बना और देवनागरी वर्ण के आकारानुसार जो कमल के फूल से अलंकृत है, वह प्रतीक है “श्री” का। यह देवी महालक्ष्मी का एक नाम है जिनका गुरुमाई जी ने अपनी कविता में बड़े लालित्यपूर्ण ढंग से स्तुतिगान किया है।

तो सचमुच, यह कविता रोमांचकारी ढंग से अनूठी है। इसमें एक धारणा सम्मिलित है जिसे आप कविता के एक भाग के रूप में कर सकते हैं या उसे **अलग से सुनते हुए कर सकते हैं।** इसमें एक बहुत ही उत्साहजनक निमन्त्रण भी सम्मिलित है—दीपावली पर स्वरचित कविताएँ लिखने के लिए गुरुमाई जी आपको आमन्त्रित कर रही हैं।

मैं क्षण भर के लिए इस अति विशेष आमन्त्रण पर ठहरना चाहूँगी। दीपावली प्रकाश का त्योहार है, और गुरुमाई जी आपको उन कार्यों के विषय में कविताएँ लिखने के लिए प्रेरित कर रही हैं जो आपने अपने जीवन में और संसार में प्रकाश लाने के लिए किए हैं, जो आप कर रहे हैं और जो आप करेंगे। आपकी लेखनी को प्रेरणा मिले इसके लिए गुरुमाई जी ने **अपनी कविता में कुछ विशिष्ट प्रश्न भी दिए हैं जिन पर आप ग़ौर कर सकते हैं।**

गुरुमाई जी ने मुझे बताया कि जब वे यह कविता लिख रही थीं और कविता लिखते-लिखते इस भाग पर आईं तो उन्हें लगा कि मानो वे इस विषय पर पूरी की पूरी एक *किताब* लिख सकती हैं। परन्तु उन्होंने सोचा, "वह तो नहीं हो सकता। महोत्सव की इस कविता में एक पूरी की पूरी किताब तो समा नहीं सकती!"

फिर गुरुमाई जी ने सोचा, "सिद्धयोग पथ पर तो संसार भर में मेरे भक्त और साधक हैं! *वे* इस बारे में कितना कुछ लिख सकते हैं। और यदि वे ऐसा करें तो कितना अद्‌भुत होगा! हर किसी के पास बताने को एक निराला दृष्टिकोण है, अपने दिली प्रेम को दूसरों तक पहुँचाने का अपना तरीक़ा है, इस संसार में योगदान देने का अपना एक ढंग है।"

गुरुमाई जी ने आप सबके साथ साझा करने के लिए मुझे एक सुझाव भी दिया। जब आप कविता लिखने की तैयारी कर रहे हों तो आप धारणा का सहारा ले सकते हैं। धारणा करने से आपको अपने अन्दर के उस स्थान तक पहुँचने में मदद मिलेगी जहाँ से प्रेरणा, अन्तर्दृष्टि और रचनात्मकता उभरती हैं। तब आपका लेखन मात्र एक मानसिक अभ्यास नहीं होगा, वरन् उसे अन्तर-स्फुरण द्वारा मार्गदर्शन प्राप्त होगा। वह हृदय का उद्‌गार होगा।

एक बार जब आप अपनी कविताएँ लिख लें तो आप उन्हें सिद्धयोग पथ की वेबसाइट पर भेज सकते हैं। इनमें से कुछ कविताएँ वेबसाइट पर प्रकाशित होंगी जिससे हर कोई आपके अनुभवों का आनन्द ले सके और उनसे लाभान्वित भी हो सके।

मैं तो आपकी कविताओं को पढ़ने के लिए बेसब्री से इन्तज़ार कर रही हूँ। वास्तव में, समापन के ये शब्द लिखते हुए मैं आपकी मुस्कराहटों की चमक को देख पा रही हूँ।

भवदीया,
ईशा सरदेसाई

© २०२३ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।